बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतम पुरा, दिल्ली।

साप्ताहिक पाठ योजना

कक्षा – छठी

विषय- हिंदी

सप्ताह- 5/10/20 से 9/10/20 तक कालांश – 03

उपविषय – **झाँसी की रानी (कविता)**

अधिगम प्रतिफल -

1) छात्र झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के विषय में विस्तारपूर्वक जानेंगे ।।
2) छात्रों में देशभक्ति की भावना का विकास हो सकेगा।
3) छात्र यह जान सकेंगे कि आज़ादी के संघर्ष में केवल पुरुष ही नहीं महिलाओं ने भी बढ़ -चढ़कर भाग लिया था।
4) छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि हो सकेगी।

निर्देशात्मक सहायक सामग्री –

दिए गए लिंक के द्वारा छात्र कविता का भावार्थ समझेंगे।
https://www.youtube.com/watch?v=8r5WieLMfpc&feature=youtu.be

नीचे दिए गए लिंक के द्वारा छात्र झाँसी की रानी के बारे में जानेंगे।
https://www.youtube.com/watch?v=2XXzYCfBiAg&feature=youtu.be

पाठ परिवर्धन –

कालांश -1

BBP PITAMPURA

कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता को प्रदर्शित करती है। सन् 1857 की लड़ाई में सभी राजवंशों ने एक होकर अंग्रेज़ों से लड़ने का फैसला किया था। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने बचपन से ही तीर-कमान और तलवार चलाना सीखा था। विवाह के कुछ ही दिन बाद उनके पति का देहांत हो गया। उनकी कोई संतान न देखकर लॉर्ड डलहौजी ने "राज्य हड़प" नीति के तहत झाँसी पर अधिकार के लिए अपनी फौज भेज दिया। अँग्रेज़ जो व्यापार करने भारत आए थे, धीरे-धीरे उन्होंने देश के कई हिस्सों पर अपना अधिकार कर लिया था। राजवंशों से लेकर साधारण जनता तक में अंग्रेज़ों के विरुद्ध रोष था। फलस्वरूप एक साथ देश के कई हिस्सों में क्रांति की आग भड़क उठी। झाँसी में क्रांति की बागडोर रानी लक्ष्मीबाई के हाथों में थी। युद्धक्षेत्र में पुरुषों के बीच वह किसी वीर पुरुष की ही भाँति लड़ी थी। लेफ्टिनेंट वॉकर को उन्होंने परास्त किया और 100 मील की दूरी पार कर कालपी पहुँची। उनका घोड़ा थकावट से गिरकर मर गया। यमुना किनारे पुनः रानी ने अँग्रेज़ों को हराया और ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। अँग्रेज़ फिर से अपनी सेना लेकर आ धमके। इस बार रानी ने अपनी सखियों काना और मंदरा के साथ मिलकर भारी मार-काट मचाई और जनरल स्मिथ को परास्त किया लेकिन तभी ह्यूरोज़ ने पीछे से आकर उन्हें घेर लिया। रानी फिर भी वहाँ से निकलने में सफल हो गई लेकिन रास्ते में मिले एक नाला को पार करने में उनका नया घोड़ा हिचकने लगा। उसी समय पीछे से आ रहे अँग्रेज़ सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। अकेली रानी कब तक उनका मुकाबला करती। वह घायल होकर गिर पड़ी और स्वर्ग सिधार गई। उनकी उम्र उस समय मात्र तेइस वर्ष थी। उनका बलिदान देश के इतिहास में अमर है।

1. *सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,*
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–अँग्रेज़ों की गलत नीतियों से देशी शासक वर्ग चिंतित थे। अपने शोषण और अपमान से राज-परिवारों की भौंहें क्रोध से तन गईं थी। वर्षों की गुलामी ने जिस भारत को बूढ़ा और कमजोर कर दिया था, उसमें भी जवानी का नया जोश हिलोर लेने लगी थी। सबको अपनी खोई हुई स्वतंत्रता का महत्त्व समझ में आने लगा और सबने यह निश्चय कर लिया कि अँग्रेज़ों को देश से मार भगाना है।

सन् 1857 की लड़ाई में पुरानी तलवारें भी चमक उठीं और मर्दों के साथ किसी मर्द की भाँति वीरता से वह स्त्री भी खूब लड़ी, जो झाँसी की रानी थी। बुंदेलखंड के वासी हमें उसकी कथा सुनाया करते हैं।

2. *कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,*
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,
वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अपने पिता की इकलौती संतान थी। कानपुर के नाना उसे अपनी बहन मानते थे। वह बहुत सुंदर भी थी। नाना के साथ ही वह पढ़ती और खेलती थी। उनकी दोस्ती केवल बरछी, ढाल, तलवार और कटार से थी। शिवाजी की वीरता की कथाएँ उसे जुबानी याद थीं। बुंदेलवासी कहते हैं कि वह एक महान योद्धा थी, जो युद्ध में मर्दों की भाँति लड़ी।

3. *लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता के अवतार,*
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–यह कहना मुश्किल है कि रानी लक्ष्मीबाई लक्ष्मी थी, दुर्गा थी या स्वयं वीरता ने उसके रूप में जन्म लिया था। उसकी तलवारबाजी मराठों में प्रसन्नता की लहर भर देती। नकली युद्ध, दुश्मनों को घेरना, शिकार करना, सेना घेरना, किले तोड़ना–यही बचपन में रानी के प्रिय खेल थे। महाराष्ट्र की कुलदेवी माँ दुर्गा की वह भी पूजा किया करती थी। बचपन से ही उनमें वीरता के संस्कार भरे हुए थे। बुंदेलवासी उस वीर स्त्री के पौरुष की कथा सुनाते हैं।

4. *हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,*
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–वीरता की प्रतीक रानी का विवाह सुख-समृद्धि के प्रतीक झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ हुआ। राजमहल में खुशियाँ छा गईं। बधाई के गीत गाए गए। बुंदेलखंड के वीर योद्धाओं के यश का गीत जो दुनिया गाती है, रानी लक्ष्मीबाई उस गीत को चरितार्थ करने झाँसी के महलों में आईं। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे चित्रा ने अर्जुन को पा लिया हो और शिव ने भवानी को। आज भी बुंदेलखंडवासियों के मुख से हम उस वीर रानी की कथा सुनते हैं, जिसने पुरुषों को भी कड़ी टक्कर दी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखिए।

१. इस पाठ की विधा तथा कवयित्री का नाम लिखिए।
२. बचपन में रानी के प्रिय खेल क्या थे ?
३. लक्ष्मीबाई का विवाह किसके साथ हुआ ?

क्रियाकलाप –

निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाएँ -

१. वैभव
२. राजमहल

कालांश -2

नोट- छात्र शेष कविता का सस्वर वाचन करते हुए भावार्थ को जानेंगे|

5. *उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,*
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलानेवाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं,
रानी विधवा हुई हाय ! विधि को भी नहीं दया आई,
निःसंतान मरे राजा जी,
रानी शोक-समानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–रानी लक्ष्मीबाई के जीवन में सौभाग्य का उदय हुआ। महलों में खुशहाली छा गई, लेकिन भाग्य को यह मंजूर न था। समय का चक्र शीघ्र ही उनके जीवन में अंधकार ले आया। तीर कमान थामने वाले उनके हाथों में भाग्य से सुहाग की चूड़ियाँ देखी नहीं गईं। राजा जी निःसंतान ही चल बसे। रानी विधवा हो गई। रानी के दुख की कोई सीमा नहीं थी। ईश्वर को भी उन पर दया नहीं आई। बुंदेलखंडवासी हमें उसी वीर और साहसी रानी की कथा सुनाते हैं।

6. *बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाया,*
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झण्डा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–राजा की मृत्यु के बाद झाँसी का दीपक बुझ गया। राज्य में दुख का अँधेरा छा गया। उसकी देखभाल करने वाला कोई न रहा। यह समाचार जानकर लॉर्ड डलहौजी मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने समझा कि राज्य को हथियाने का यह अच्छा मौका है। उसने तुरत ही सेनाएँ भेज कर झाँसी के किले पर अपना झंडा फहरा दिया और स्वयं को उस राज्य का अधिकारी घोषित कर दिया, जिसका कोई उत्तराधिकारी न था। आँखों में आँसू भरे हुए रानी ने देखा झाँसी सुनसान हो गई थी, वहाँ अजीब-सी नीरवता छाई हुई थी। बुंदेले हरबोलों के मुँह से हमने उस हिम्मतवाली रानी की कहानी सुनी है, जो जमकर दुश्मनों से लड़ी।

7. *अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,*
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,
रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–अँग्रेज़ों की चालाकियों को समझना कठिन था। वे किसी की प्रार्थना नहीं सुनते थे। जब वे व्यापारी बन कर भारत आए, तब उन्होंने हमसे दया माँगी थी, लेकिन अब डलहौजी ने देश में अपना राज्य विस्तार आरंभ कर दिया था, उनका स्वरूप बदल गया था। राजाओं और नवाबों को भी वह अपने पैर की धूल समझने लगे थे। नवाबों और राजाओं की रानियाँ दासी बन गई थीं और अंग्रेज महिलाएँ महारानी बनती चली जा रही थीं। बुंदेलों के मुँह से हमने लक्ष्मीबाई की वीरता की सभी कहानियाँ सुनी हैं।

8. *छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,*
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपुर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जबकि सिंध, पंजाब, ब्रम्हा पर अभी हुआ था वज्र-निपात,
बंगाले-मद्रास आदि की
भी तो यही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–अँग्रेज़ों ने राजधानी दिल्ली छीन ली। देखते ही देखते लखनऊ पर भी अधिकार कर लिया। उन्होंने पेशवा को बिठूर में कैद कर लिया। नागपुर पर भी धोखे से अधिकार कर लिया। उदयपुर, तंजौर, सतारा और कर्नाटक की भी उनके सामने कोई हैसियत नहीं रही। सिंध, पंजाब और ब्रह्मपुत्र पर भी उनके भीषण आक्रमण की मुसीबत आयी। बंगाल और मद्रास आदि राज्यों की भी यही दशा थी। बुंदेले हमें इनकी कथा के साथ रानी लक्ष्मीबाई की वीरता की कथा भी सुनाते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखिए।

१. व्यापारी के रूप में किस फिरंगी ने पैर पसारे थे ?
२. अश्रुपूर्ण रानी ने क्या देखा ?
३. कौन सी राजधानी छिन गई थी ?

कालांश -3

नोट- छात्र शेष कविता का सस्वर वाचन करते हुए भावार्थ को जानेंगे|

9. *रानी रोईं रनिवासो में, बेगम गम से थीं बेज़ार,*
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अखबार,
'नागपुर के ज़ेवर ले लो', 'लखनऊ के लो नौलख हार',
यों परदे की इज़्ज़त पर–
देशी के हाथ बिकानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–अँग्रेजों ने देशी राजाओं और नवाबों का अपमान किया जिससे रनिवासों में उनकी रानियाँ और बेगमें दुःख से बेहाल हो रोया करती थीं। उनके गहने और कपड़े कलकत्ते के बाजार में बेचे जाते थे। अँग्रेज अपने अखबारों में खुलेआम उनकी नीलामी के विज्ञापन छापते थे। इस प्रकार परदे में रहने वाली भारत की इज्जत विदेशियों के हाथों बेची जा रही थी। बुंदेले हरबोलों के मुँह से हमने रानी लक्ष्मीबाई के पौरुष और वीरता की कहानियाँ भी सुनी हैं।

TAMPURA

10. *कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,*
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो
सोई ज्योति जगानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–अँग्रेजों की नीतियों से सभी लोगों में आक्रोश था। झोपड़ियों में रहने वाले जहाँ गहरा कष्ट झेल रहे थे, वहीं महलों में रहने वाले अपने अपमान से आहत थे। दूसरी ओर देश के वीर सैनिक अपने पूर्वजों के प्रति अभिमान के भाव से भरे हुए थे। नाना धुंधूपंत पेशवा उसी समय युद्ध के लिए आवश्यक सामग्री जुटाने में लगे हुए थे। उधर उनकी छबीली बहन लक्ष्मीबाई ने खुलेआम रणचंडी का रूप धारण कर युद्ध का ऐलान कर दिया। इस प्रकार युद्ध का वह पावन यज्ञ शुरू हुआ, जिसे देश और देशवासियों के हृदय की सोई हुई ज्योति को जगाना था। बुंदेले हमें उस महान और वीर रानी की कथा सुनाते हैं।

11. *महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,*
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–इस क्रांति में पूरा देश भागीदार था। महलों में रहने वालों ने इस आग को रौशन किया और झोपड़ी में रहने वालों ने इसकी लपटों को तेज किया। स्वतंत्रता की यह चिंगारी देशवासियों के हृदय से आई थी। क्रांति की इस लहर ने झाँसी और दिल्ली को सावधान कर दिया। लखनऊ को भी इसने अपने लपेटे में ले लिया। मेरठ, कानपुर और पटना में भी क्रांति की धूम थी। जबलपुर और कोल्हापुर में भी कुछ चिनगारियाँ भड़क रही थीं। यह कहानी हमने बुंदेलों के मुँह से सुनी है। इस क्रांति में झाँसी की रानी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था।

12. *इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,*
नाना धुंधूपंत ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,
लेकिन आज जुर्म कहलाती,
उनकी जो कुर्बानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

व्याख्या–स्वतंत्रता के इस महान एवं पुनीत कार्य में कई बहादुर शहीद हुए। इनमें नाना धुंधूपंत, ताँतिया और चतुर अजीमुल्ला प्रसिद्ध हैं। साथ ही अहमदशाह मौलवी और ठाकुर कुँवरसिंह जैसे आजादी के वीर सिपाहियों के नाम भी भारत के इतिहास में हमेशा अमर रहेंगे, परंतु इनका यह बलिदान उस समय अँग्रेजों की नजर में अपराध था। बुंदेले हमें वह कथा सुनाते हैं जिसमें रानी लक्ष्मीबाई मर्दाने रूप में अँग्रेजों से डटकर लड़ी थी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखिए।

१. गहने और कपड़े कहाँ बिकते थे?
२. युद्ध के लिए सामान कौन जुटा रहा था?
३. संग्राम की कुछ हलचल किन स्थानों पर उकसानी थी?

क्रियाकलाप -

रानी लक्ष्मीबाई का चित्र बनाएँ अथवा चिपकाएँ।

मूल्यांकन -

मौखिक चर्चा , गृह कार्य , साप्ताहिक परीक्षा ।